

अर्थ (Meaning)

इकाई अथवा उत्पादन लागत लेखांकन एक ऐसी विधि है जिसके अन्तर्गत एकरूप या एक समान (Identical) निर्मित वस्तुओं की कुल उत्पादन लागत तथा प्रति इकाई उत्पादन लागत ज्ञात की जाती है। इस विधि में निर्मित वस्तुओं की लागत एक समान होती है। इस विधि का प्रयोग सीमित दशाओं में ही किया जा सकता है। इस प्रणाली का प्रयोग उन उद्योगों में किया जाता है जहाँ एक ही प्रकार की वस्तु वर्ष भर निर्मित होती रहती है। यही कारण है कि इस पद्धति को एकल लागत पद्धति (Single Costing System) भी कहते हैं। इस पद्धति की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

परिभाषाएँ (Definitions)

जे.आर. बाटलीबोय के अनुसार, “इकाई या उत्पादन लागत विधि उन उपक्रमों के अनुकूल होती है जो एक प्रमाणित वस्तु का उत्पादन करते हैं और जिसके अन्तर्गत उत्पादन की एक स्वाभाविक इकाई की लागत की गणना की जाती है।”

“Single or output cost system is used in business where a standard product is turned out and it is desired to find out the cost of a basic unit of production.” —J.R. Batliboi

वाल्टर डब्ल्यू. बिग के अनुसार, “जहाँ एक ही प्रकार की वस्तुएँ जिन्हें किसी परिमाण या इकाई के रूप में व्यक्त किया जा सकता है, उत्पादित की जाती हैं, इस प्रकार की रीति का प्रयोग किया जाता है।”

“Unit costing method is a method of costing applied to ascertain the cost per unit of production where standard and standard products are manufactured.” —Walter W. Bigg

हेरोल्ड जे. हेल्डन के अनुसार, “उत्पादन लागत लेखांकन या इकाई लागत लेखांकन, लागत निर्धारण की एक ऐसी पद्धति है जो उत्पादन की इकाई पर आधारित है, जहाँ निर्माण कार्य निरन्तर होता है तथा ये इकाइयाँ समान प्रकार की होती हैं या उन्हें अनुपातों द्वारा एक समान बनाया जा सकता है।”

“Production Cost Accounting or Unit Cost Accounting is such a method of cost ascertainment which is based on production unit. It is applicable where the production work is done continuously and the units are of same types or manufactured identical.” —Harold J. Wheldon

इस पद्धति की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

यह पद्धति वहीं प्रयोग में लायी जाती है जहाँ,

- (i) उत्पादन बड़ी मात्रा में होता है।
- (ii) उत्पादन की इकाइयाँ एक ही किस्म एवं आकार की होती हैं।
- (iii) उत्पादन कार्य निरन्तर (Continuous) चलता रहता है।
- (iv) उत्पादन की कुल लागत तथा प्रति इकाई लागत ज्ञात करनी होती है।

उपरोक्त विशेषताओं वाले उद्योगों के अन्तर्गत ईट भट्टा, कागज निर्माण, चीनी मिल, कोयला खान, इस्पात निर्माण, सीमेण्ट उद्योग तथा आटा मिल आदि को शामिल किया जाता है। इस विधि में व्ययों के विभाजन की आवश्यकता नहीं पड़ती है क्योंकि समस्त व्यय एक ही प्रकार की वस्तुओं के उत्पादन पर किया जाता है। जिन उद्योगों में विभिन्न किस्म की वस्तुओं का उत्पादन किया जाता है या एक ही किस्म की वस्तु विभिन्न आकारों में बनायी जाती है, वहाँ प्रत्येक श्रेणी या इकाई की लागत का विश्लेषण आवश्यक होता है।

वित्तीय लेखों की सहायता से एक निश्चित समयावधि में कुल व्ययों की जानकारी प्राप्त कर ली जाती है। ये व्यय उस निर्धारित समयावधि में उत्पादित वस्तुओं की कुल लागत होती है। कुल लागत में उत्पादित इकाइयों से भाग देकर प्रति इकाई लागत ज्ञात कर ली जाती है।

लागत के तत्व (ELEMENTS OF COSTS)

लागत के मुख्य तत्व निम्नलिखित हैं—

(1) सामग्री (Materials)—सामग्री उत्पादन लागत का एक महत्वपूर्ण तत्व है। दूसरे शब्दों में, निर्माण कार्य में प्रयुक्त सामग्री (Material consumed) की लागत कुल लागत की एक प्रमुख मद होती है। सामग्री का प्रयोग कितना हुआ, यह जानने के लिए सामग्री के प्रारम्भिक स्टॉक, सामग्री के क्रय, सामग्री के क्रय पर भाड़ा आदि के योग में सामग्री का अन्तिम रहति, डिप्लेट को वापस की गयी सामग्री की लागत, बेची गयी सामग्री की लागत, खराब सामग्री का बेचा गया मूल्य आदि के योग को घटा दिया जाता है। इस प्रकार प्राप्त शेष प्रयुक्त सामग्री की लागत होती है।

(2) श्रम (Labour)—श्रमिकों को दी गयी कुल मजदूरी में से प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष श्रम की मजदूरी को अलग-अलग दिखाया जाता है। प्रत्यक्ष श्रम की मजदूरी को उत्पादन की मूल लागत (Prime Cost) में तथा अप्रत्यक्ष श्रम की मजदूरी को कारखाना उपरिव्यय में शामिल किया जाता है।

(3) प्रत्यक्ष व्यय (Direct Expenses)—सामग्री एवं श्रम के अलावा उत्पादन के कुछ ऐसे व्यय होते हैं जिन्हें प्रत्यक्ष व्यय कहा जाता है, जैसे—अधिकार शुल्क, नक्शे वगैरह बनाने के व्यय तथा प्रयोगात्मक व्यय आदि। इन्हें मूल लागत (Prime Cost) में शामिल किया जाता है।

(4) उपरिव्यय (Overheads)—उत्पादन के वैसे व्यय जो उत्पादन से सीधे सम्बन्धित नहीं होकर कारखाने, कार्यालय तथा बिक्री व वितरण से सम्बन्धित होते हैं, उपरिव्यय (Overheads) की श्रेणी में आते हैं। कुल उपरिव्ययों में से कारखाने, कार्यालय तथा बिक्री व वितरण के उपरिव्ययों को अलग-अलग छोटकर दिखाया जाता है।

उत्पादन लागत लेखांकन के उद्देश्य (OBJECTS OF OUTPUT COSTING)

उत्पादन लागत लेखांकन के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

- (1) उत्पादन की कुल लागत ज्ञात करना;
- (2) उत्पादन की प्रति इकाई लागत ज्ञात करना;
- (3) प्रकृति के आधार पर व्ययों का विश्लेषण व वर्गीकरण करना;
- (4) व्यय के प्रत्येक वर्गीकरण का कुल लागत के साथ सम्बन्ध बताना एवं
- (5) अलग-अलग अवधि के व्ययों का तुलनात्मक अध्ययन कर व्ययों पर नियन्त्रण रखना आदि।
- (6) निविदा मूल्य व विक्रय मूल्य का निर्धारण आदि।

लागत विवरण एवं लागत-पत्रक तैयार करने सम्बन्धी महत्वपूर्ण मदें

(IMPORTANT ITEMS REGARDING PREPARATION OF STATEMENT OF COST AND COST-SHEET)

1. सामग्री की सामान्य हानि (Normal Loss of Material)—सामग्री की ऐसी हानि जिसे रोक नहीं जा सके अर्थात् जो प्राकृतिक प्रकृति की हो, सामग्री की सामान्य हानि कहलाती है, जैसे—वाष्पीकरण के परिणामस्वरूप सामग्री के वजन में कमी आना आदि। सामग्री की ऐसी हानि को सामग्री की लागत में से घटाया नहीं जाता है बल्कि इस हानि का भार सम्बन्धित उत्पादन पर ही डाला जाता है।

2. सामग्री की असामान्य हानि (Abnormal Loss of Material)—सामग्री के समुचित नियन्त्रण के अभाव में जो हानि होती है, उसे सामग्री की असामान्य हानि कहते हैं। वस्तुतः ऐसी हानि प्राकृतिक प्रकृति की नहीं होती है। ऐसी हानि को उचित नियन्त्रण से रोक जा सकता है, जैसे—आग से सामग्री की हानि, सामग्री की चोरी आदि। ऐसी हानि को लागत का भाग नहीं माना जाता है तथा इसे सामग्री की लागत में से घटा दिया जाता है।

3. सामान्य कार्यहीन समय की मजदूरी (Wages of Normal Idle Time)—कार्य के दौरान समय की ऐसी बर्बादी जो स्वाभाविक होती है और जिसे रोक पाना सम्भव नहीं होता है, सामान्य कार्यहीन समय कहलाता है। इस अवधि की मजदूरी को सामान्य कार्यहीन समय की मजदूरी कहा जाता है। ऐसी मजदूरी के भार को सम्बन्धित उत्पादन पर ही डाला जाता है। अतः सामान्य कार्यहीन समय की मजदूरी को श्रम की लागत में से घटाया नहीं जाता है।

4. असामान्य कार्यहीन समय की मजदूरी (Wages of Abnormal Idle Time)—समय की ऐसी बर्बादी जिसे समुचित नियन्त्रण से रोक जा सकता है, असामान्य कार्यहीन समय कहलाता है तथा उस अवधि की मजदूरी को असामान्य कार्यहीन समय की मजदूरी कहते हैं। इस अवधि की मजदूरी को लागत का भाग नहीं माना जाता है और परिणामतः इसे श्रम की लागत में से घटा दिया जाता है।

5. **वृषा या दूषित या छीजन या अवशेष की बिक्री (Sale of Scrap, Defective, Salvage or Residue)**—यदि इनके सम्बन्ध में प्रश्न में स्पष्ट सूचना दी गई हो तो इनका समायोजन सम्बन्धित लागत में ही किया जायेगा किन्तु यदि स्पष्ट निर्देश नहीं दिया गया हो तो इन्हें कारखाना लागत ज्ञात करने के पूर्व की लागत में से घटा दिया जाता है।

6. **दूषित या रद्द किया गया कार्य (Defective or Rejected Work)**—यदि उत्पादन प्रक्रिया में कुछ माल प्रमाप स्तर का नहीं हो पाता है और जिन्हें अतिरिक्त व्यय कर प्रमाप स्तर तक नहीं लाया जा सकता तो उन्हें अस्वीकृत कर दिया जाता है तथा उन्हें बाजार में रियायती दरों पर बेच दिया जाता है। बिक्री से प्राप्त रकम को कारखाना लागत में से तथा अस्वीकृत इकाइयों को उत्पादन की कुल इकाइयों में से घटा दिया जाता है किन्तु यदि दोषपूर्ण माल ऐसा है जिसे अतिरिक्त व्यय कर सुधारा जा सकता है अर्थात् विक्रय योग्य बनाया जा सकता है तो इस अतिरिक्त व्यय को कारखाना उपरिव्ययों में अतिरिक्त कारखाना उपरिव्यय के रूप में जोड़ दिया जाता है। इसके पश्चात् विक्रय योग्य इकाइयाँ एवं उनकी कुल लागत ज्ञात हो जाती है।

7. **नगद बट्टा (Cash Discount)**—नगद बट्टा लागत का अंग नहीं माना जाता है। यह शुद्ध वित्तीय प्रकृति की मद है अतः इसे लागत में शामिल नहीं किया जाता है, जबकि व्यापारिक बट्टे को विक्रय सम्बर्द्धन का व्यय मानते हुए विक्रय एवं वितरण व्यय में शामिल किया जाता है।

8. **संयुक्त व्ययों का विभाजन (Allocation of Joint Expenses)**—स्पष्ट निर्देश के अभाव में कारखाना उपरिव्ययों का विभाजन मजदूरी के अनुपात में तथा कार्यालय, विक्रय एवं वितरण व्ययों का विभाजन कारखाना लागत के अनुपात में किया जाता है।

9. **व्यापारिक छूट (Trade Discount)**—व्यापारिक छूट वह छूट है जो वर्तमान अथवा भावी ग्राहकों को दी जाती है। इसका मुख्य उद्देश्य बिक्री की मात्रा को बढ़ाना होता है। इसका लेखा दो ढंग से हो सकता है। प्रथम, व्यापारिक छूट की राशि सकल बिक्री राशि से घटा दी जाती है एवं द्वितीय, इसे विक्रय एवं वितरण उपरिव्यय माना जा सकता है किन्तु प्रथम विधि ही अधिक उपयुक्त होती है।

10. **बैंधाई व्यय (Packing Charges)**—बैंधाई व्यय का लेखा इसकी प्रकृति पर निर्भर करता है। यदि पैकिंग के अभाव में माल का बेचा जाना सम्भव नहीं हो (जैसे—सेविंग क्रीम का पैकिंग आदि) तो उस व्यय को प्रत्यक्ष सामग्री व्यय माना जाता है। यदि पैकिंग का खर्च अर्द्धनिर्मित माल के सम्बन्ध में कारखाने के अन्तर्गत माल को इधर-उधर सुरक्षित ढंग से करने के उद्देश्य से किया जाता है तो इस व्यय को कारखाना उपरिव्यय माना जाता है, जबकि निर्मित माल के सम्बन्ध में बिक्री के उद्देश्यों से किया गया व्यय विक्रय एवं वितरण उपरिव्यय के रूप में माना जाता है।

लागत निर्धारण के विभिन्न सूत्र

(DIFFERENT FORMULAS TO DETERMINE COST)

(1) प्रयुक्त सामग्री की लागत की गणना

(CALCULATION OF THE COST OF MATERIAL CONSUMED)

इसके लिए निम्नलिखित सूत्र का प्रयोग किया जाता है—

Materials consumed =

Rs.

Opening Stock of Raw Materials

Add : (i) Purchase of Raw Materials

.....

(ii) Carriage on Purchase or Carriage Inward

.....

(iii) Octroi and Customs Duty

.....

(iv) Direct Expenses on Materials

.....

Less : (i) Closing Stock of Raw Materials

.....

(ii) Cost of Materials sold

.....

(iii) Sale of Waste and Scrap Materials

.....

(iv) Defective Materials returned to Suppliers

.....

(v) Abnormal Wastage of Materials

.....

(vi) Cost of By-products

.....

Value of Materials consumed

.....

.....

(2) चालू कार्य का मूल्यांकन

(VALUATION OF WORK-IN-PROGRESS)

चालू कार्य का आशय उस कार्य से है जो अर्द्धनिर्मित अवस्था में है अर्थात् न तो वह सामग्री ही है और न निर्मित वस्तु। उत्पादन के क्रम में प्रत्येक उत्पादक के पास एक निश्चित समय में कुछ न कुछ चालू कार्य का होना एक स्वभाविक बात है। अब प्रश्न उठता है कि इसे दिखाया कहाँ जाय, मूल लागत में या कारखाना उपरिव्यय में तथा दूसरा, मूल्यांकन किस प्रकार किया जाय? इसके सम्बन्ध में अलग-अलग विद्वानों की अलग-अलग विचारधारणाएँ हैं। कुछ के अनुसार इसे मूल लागत (Prime Cost) में दिखाया जाना चाहिए तथा कुछ के अनुसार कारखाना उपरिव्यय में। यदि चालू कार्य के प्रारम्भिक व अन्तिम शेष दिये हुए हों तो उपरिव्यय की गणना अग्रलिखित में से किसी एक विधि द्वारा की जायेगी—

1.4
(अ) जब चालू कार्य मूल परिव्यय पर मूल्यांकित किया जाय (When Work-in-progress is valued at Prime Cost) — Rs.

Direct Materials

Direct Labour

Direct Charges

Add : Work-in-progress (opening)

Less : Work-in-progress (closing)

Prime Cost

(ब) जब चालू कार्य कारखाना परिव्यय पर मूल्यांकित किया जाय (When Work-in-progress is valued at Factory Costs) Rs.

Direct Materials

Direct Labour

Direct Charges

Prime Cost

Add : Factory Overheads

Add : Work-in-progress (opening)

Less : Work-in-progress (closing)

Works Costs/Factory Costs

(3) उत्पादन लागत का मूल्यांकन (VALUATION OF COST OF PRODUCTION)

Direct Materials

Direct Labour

Direct Charges

Prime Cost

Add : Factory Overheads

Add : Work-in-Progress (Opening)

Less : Work-in-Progress (closing)

Less : Sale of Scrap

Works Cost

Add : Office Overhead

Cost of Production

(4) बेचे गये माल की लागत का मूल्यांकन (VALUATION OF COST OF GOODS SOLD)

बेचे गये माल की लागत के मूल्यांकन के लिए निम्नलिखित सूत्र का प्रयोग किया जा सकता है—
Cost of Goods sold = (Total Cost of Production + Value of Opening Stock of Finished Goods)

— (Value of Closing Stock of Finished Goods)

Direct Materials

Direct Labour

Direct Charges

Prime Cost

Add : Factory Overheads
Add : Work-in-progress (opening)

Less : Work-in-progress (closing)

Add : Office Overhead

Work Cost

Cost of Production

Add : Opening Balance of Finished Goods

Less : Closing Balance of Finished Goods

Value of Cost of Goods sold

(5) लागत मूल्य व विक्रय मूल्य पर लाभ की गणना

(CALCULATION OF PROFIT ON COST PRICE OR SELLING PRICE)

(अ) लागत मूल्य पर लाभ की गणना (Calculation of Profit on Cost Price or Cost of Production)—मान लिया—

	Rs.
Raw Material consumed	10,000
Direct Wages	5,000
Prime Cost	15,000
Factory Overhead	3,000
Works Cost	18,000
Office Overhead	2,000
Cost of Production or Total Cost	20,000

पुनः मान लिया, लागत मूल्य (Cost of Production) पर 10% की दर से लाभ की गणना करनी हो तो—

$$\text{लाभ (Profit)} = \frac{\text{Cost Price} \times \% \text{ of Profit}}{100}$$

$$= \frac{20,000 \times 10}{100} = \text{Rs. } 2,000$$

$$\therefore \text{विक्रय मूल्य} = \text{लागत} + \text{लाभ} = 20,000 + 2,000$$

$$= \text{Rs. } 22,000$$

(ब) विक्रय मूल्य पर लाभ की गणना जब केवल लागत मूल्य ज्ञात हो (Calculation of Profit on Selling Price when only Cost Price/Cost of Production is known)—चूँकि लागत मूल्य में लाभ जोड़ने के बाद ही विक्रय मूल्य ज्ञात होता है। अतः लागत मूल्य पर ही विक्रय मूल्य के बराबर लाभ की गणना करने के लिए उपरोक्त सामान्य सूत्र का प्रयोग नहीं कर एक विशिष्ट सूत्र का प्रयोग किया जायेगा अर्थात्—

$$\text{लाभ (Profit)} = \frac{\text{Cost Price} \times \% \text{ of Profit}}{100 - \% \text{ of Profit}}$$

पुनः मान लिया, विक्रय मूल्य पर 10% की दर से लाभ ज्ञात करना हो तो उपरोक्त लागत अर्थात् 20,000 रुपये पर लाभ की राशि

$$= \frac{20,000 \times 10}{100 - 10} = \frac{20,000 \times 10}{90} = \text{Rs. } 2,222.22$$

$$\therefore \text{विक्रय मूल्य} = 20,000 + 2,222.22 = \text{Rs. } 22,222.22$$

उपरोक्त सूत्र को दूसरे ढंग से भी समझा जा सकता है—
मान लिया,

$$\text{विक्रय मूल्य} = 100 \text{ रु.}$$

$$\text{घटायी : लाभ } 10\% = \underline{10}$$

$$\therefore \text{लागत मूल्य} = \underline{\underline{90 \text{ रु.}}}$$

दूसरे शब्दों में, लाभ लागत मूल्य का $\frac{10}{90}$ या $\frac{1}{9}$ भाग है।

$$\therefore 20,000 \text{ रु. लागत पर लाभ} = 20,000 \times \frac{1}{9} = 2,222.22 \text{ रु.}$$

इसे ऐकिक नियम से भी समझा जा सकता है—

$\therefore$ 90 रु. की लागत पर 10 रु. का लाभ होता है

$$\therefore 1 \text{ रु. की लागत पर लाभ होगा} = \frac{10}{90}$$

$$\therefore 20,000 \text{ रु. की लागत पर लाभ होगा} = \frac{10}{90} \times 20,000 = 2,222.22 \text{ रु.}$$

नोट— लागत मूल्य = विक्रय मूल्य — लाभ